श्रेया संस्था द्वारा प्रस्तावित "संताल परगना क्षेत्र के लुप्त होते हस्तशिल्प और शिल्पकारों का विकास" परियोजना पर विस्तृत परियोजना प्रतिवेदन

श्रेया संस्था, दुमका की कार्यसमिति के समक्ष चर्चा एवं स्वीकृति हेतु आज दिनांक .....प्रस्तुत।

संताल परगना क्षेत्र के लुप्त होते हस्तशिल्प और शिल्पकारों का विकास

भूमिका

संताल परगना क्षेत्र इतिहासकारों का ध्यान आकर्षित करने में सक्षम नहीं रहा है, इस तथ्य के बावजूद कि इसमें बहुत समृद्ध प्रागैतिहासिक और ऐतिहासिक परंपराएं हैं। आधुनिक संताल परगना प्राचीन अंग के कुछ हिस्से और मध्यकालीन बंगाल के कुछ हिस्से से बना है। भौगोलिक दृष्टि से संताल क्षेत्र दक्कन पठार का एक हिस्सा है और यह देश का सबसे पुराना भौतिक हिस्सा है। संताल हूल के बाद, आधुनिक संताल परगना का जिला 1855 में बना तब दुमका इसका मुख्यालय बना। यह अब भारत के झारखंड राज्य का एक कमिश्नरी डिवीजन है जिसका मुख्यालय दुमका है, जिसे छह अलग-अलग प्रशासनिक जिलों में विभाजित किया गया है - दुमका, जामताड़ा, देवघर, गोड्डा, पाकुड़ और साहिबगंज।

संताल परगना क्षेत्र झारखंड का एक महत्वपूर्ण सांस्कृतिक और ऐतिहासिक क्षेत्र है, जो अपनी अनूठी हस्तशिल्प कलाओं के लिए जाना जाता है। यहां के शिल्पकारों ने अपनी कलाओं के माध्यम से न केवल अपनी पहचान बनाई है, बल्कि भारतीय संस्कृति को भी समृद्ध किया है। संताल जनसंख्या की दृष्टि से भारत के झारखंड राज्य की सबसे बड़ी जनजाति है और यह असम, बिहार, ओडिशा और पश्चिम बंगाल राज्यों के साथ - साथ नेपाल और बांग्लादेश में भी पाए जाते हैं।

अपने हंसमुख स्वभाव और शिकार, गायन और नृत्य के प्रति प्रेम के कारण संताल हिंदू और मुस्लिम किसानों की तुलना में अधिक स्वतंत्र और कम संकोची जीवन जीते हैं। वे अपनी द्रविड़-पूर्व भाषा संताली बोलते हैं जो मुंडारी भाषा वर्ग की एक भाषा है, अपने संताल बोंगा की पूजा करते हैं, अपने गांव के जीवन को लोकतांत्रिक तरीके से नियंत्रित करते हैं और नृत्य और दावत के साथ अपने संताल त्योहार मनाते हैं।

संताल शब्द दो शब्दों से मिलकर बना है; संता जिसका अर्थ है शांत और अला जिसका अर्थ है मनुष्य। अतीत में संताल खानाबदोश जीवन व्यतीत कर रहे थे। धीरे-धीरे वे छोटानागपुर पठार में बस गए और उन्होंने जंगलों को साफ किया और खेती लायक जमीने तैयार की और खेती करना प्रारम्भ किया । वे कभी अकेले नहीं रहते थे; वे हमेशा अन्य समुदायों के साथ बहुत सद्भाव के साथ रहते आये हैं। अन्य समुदाय जैसे डोकरा शिल्पकार जिन्हे वे लुडकोजादो कहते थे, पटिया चित्रकार जिन्हें गोयजादो कहते थे, लोहार जिन्हे वे कामार कहते थे, बांस के शिल्पकार जिन्हे मोहली कहते थे, जो मिट्टी के बर्तन बनाते उन्हें कुम्हार कहते थे, टैटू बनाने वाले - खुदनी। ये लोग हमेशा संताल जनजातियों के साथ रहते थे और वे एक-दूसरे की मदद करते थे और इस क्षेत्र में एक सामूहिक अर्थव्यवस्था बनाते थे। उन्होंने अपने उपयोग के लिए बहुत सी आवश्यकता की वस्तुए बनाई । ये जातियां भिन्न थी किन्तु सहअस्तित्व कायम था। परन्तु आधुनिक अर्तव्यवस्था में पुरानी चीजे अनुपयोगी होती जा रही है जिससे शिल्प बनाने वालों के सामने आजीविका के साथ ही साथ पहचान का भी संकट खड़ा हो गया है।

हमारा अतीत हमारे भविष्य को आकार देता है। आज हम जो हैं और जो हमने हासिल किया है, वह हमारी संस्कृति और विरासत का परिणाम है, जिसे पीढ़ियों ने आकार दिया है और जो हमें विरासत में मिला है। अब यह हम पर निर्भर है कि हम अपनी कला, संस्कृति और विरासत को संरक्षित करें और साथ ही नई संस्कृतियों को जन्म दें अथवा उन्हें छोड़ दे।

इतिहास के सबसे विश्वसनीय स्रोत पेंटिंग, भित्ति चित्र, मिट्टी के बर्तन, बांस और लकड़ी के शिल्प, पत्थर के शिल्प और धातु के काम, हम इन सब में उनकी रुचि के लिए अपने पूर्वजों के आभारी हैं। जैसा कि हम जानते हैं कि इस क्षेत्र में आदिवासी लोगों को लिखने में कोई दिलचस्पी नहीं थी, लेकिन हजारों वर्षों के जीवंत इतिहास हर जगह देख सकते हैं, हमारे पास कला के अपने स्वयं के रूपों, व्यंजनों और भाषाओं के साथ बेहद विविधता है, हमें इसे संरक्षित करना चाहिए।

हम संताल परगना क्षेत्र के एक प्रमुख गैर सरकारी संगठन हैं, हमें कला और संस्कृति के संरक्षण के लिए काम करना चाहिए। हमें संताल परगना की स्थानीय कला और शिल्प को पुनर्स्थापित करने और बढ़ावा देने में संलग्न होना चाहिए। यह वास्तव में महत्वपूर्ण है कि हमें अपनी स्थानीय संस्कृति, लुप्त होती कला, शिल्प और कलाकृतियों को संरक्षित और पुनर्स्थापित करना चाहिए। इससे संताल परगना क्षेत्र को न केवल एक मजबूत सांस्कृतिक पहचान मिलेगी बल्कि हस्तशिल्पियों को भी आजीविका का साधन प्राप्त होगा।

अतः श्रेया संस्था, दुमका ने स्वयं के प्रयास से यह पहल करने का निर्णय लिया है कि संताल परगना क्षेत्र के लुप्त होते हस्तशिल्प और शिल्पकारों के विकास की परियोजना प्रारम्भ की जाये।

1. परियोजना के उद्देश्य

इस परियोजना का उद्देश्य संताल परगना क्षेत्र के विशेष हस्तशिल्पों, जैसे मांदर - तमाक, संताली बांसुरी, बनाम, रणसिंघा, मननभेड़, सकाम, झुनको, जादोपटिया पेंटिंग, डोकरा कला, आदिवासी आभूषण, टेराकोटा, तीर-धनुष, बांस शिल्प, नृत्यकला रूप, संताली भित्तिचित्र, पारंपरिक वस्त्र पंछी – पडहान, भोजन एवं पेय के विभिन्न रूप आदि का पुनरुद्धार और विकास करना है साथ ही साथ शिल्पकारों को आजीविका का साधन उपलब्ध कराना है और नई पीढ़ी को प्राचीन हस्तशिल्प से अवगत कराकर उसे संरक्षित करना है।

2. परियोजना की योजना

1. हस्तशिल्पियों और शिल्पकारों की पहचान

स्थानीय खोज: - गाँवों, कस्बों और शहरों में जाकर उन हस्तशिल्पियों और शिल्पकारों की पहचान करना जो पारंपरिक कला और शिल्प में संलग्न हैं।

विशेषज्ञों से संपर्क: - कला समीक्षकों, स्थानीय जानकारों और हस्तशिल्प के क्षेत्र में विशेषज्ञों से परामर्श करना ताकि अज्ञात या कम ज्ञात शिल्पकारों की जानकारी प्राप्त हो सके।

सर्वेक्षण और साक्षात्कार: - स्थानीय समुदायों में सर्वेक्षण और व्यक्तिगत साक्षात्कार के माध्यम से हस्तशिल्पियों और शिल्पकारों की विस्तृत जानकारी एकत्र करना।

2. दस्तावेज़ीकरण

(a.) प्रोफाइल निर्माण - प्रत्येक शिल्पकार का व्यक्तिगत प्रोफाइल तैयार करना जिसमें उनका नाम, पता, कला की विशेषता, कार्य अनुभव और विशेष उपलब्धियों की जानकारी शामिल हो।

(b.) फोटो और वीडियो संग्रह - शिल्पकारों के कार्यों, उपकरणों और कार्यस्थल के फोटो और वीडियो रिकॉर्ड करना, ताकि उनकी कला और प्रक्रिया को विस्तार से दिखाया जा सके।

(c.) आलेख और रिपोर्ट: - शिल्पकारों के कार्यों, तकनीकों और उनके जीवन की कहानियों पर आलेख और विस्तृत रिपोर्ट तैयार करना। यह सामग्री भविष्य में शोधकर्ताओं और अन्य इच्छुक व्यक्तियों के लिए उपयोगी होगी।

(d.) डिजिटल आर्काइव: - एक ऑनलाइन प्लेटफ़ॉर्म बनाना जहां इन सभी दस्तावेजों को डिजिटली संगृहीत किया जा सके और इसे सार्वजनिक रूप से उपलब्ध कराया जा सके।

3. संरक्षण और संवर्धन

(a.) प्रशिक्षण कार्यक्रम: - युवा पीढ़ी को पारंपरिक हस्तशिल्प और शिल्प की तकनीकों की शिक्षा देने के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन करना।

(b.) प्रदर्शन और कार्यशालाएँ: - स्थानीय और राष्ट्रीय स्तर पर प्रदर्शनियों और कार्यशालाओं का आयोजन करना ताकि शिल्पकारों को अपनी कला प्रदर्शित करने और दूसरों से सीखने का अवसर मिले।

(c.) निधि और अनुदान: - शिल्पकारों को उनकी कला को बनाए रखने और संवर्धित करने के लिए वित्तीय सहायता और अनुदान प्रदान करना।

(d.) पहचान कार्ड निर्गत कराना - विकास आयुक्त (हस्तशिल्प) वस्त्र मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा पहचान कार्ड दिलाना। शिल्पकारों के लिए ऋण सुविधा, बैंकिंग सुविधा, मेला इत्यादि उपलब्ध कराना।

4. बाजार और विपणन

(a.) बाज़ार की पहचान: - हस्तशिल्प उत्पादों के लिए नए बाजारों की पहचान करना और शिल्पकारों को बाजार की मांग के अनुरूप अपने उत्पादों को तैयार करने में सहायता करना।

(b.)ऑनलाइन बिक्री प्लेटफ़ॉर्म: - एक ऑनलाइन प्लेटफ़ॉर्म का विकास करना जहां शिल्पकार सीधे अपने उत्पाद बेच सकें और ग्राहकों से सीधे संपर्क कर सकें।

(c.) ब्रांडिंग और प्रमोशन: -शिल्पकारों और उनके उत्पादों की ब्रांडिंग और प्रमोशन के लिए रणनीतियों का विकास करना, ताकि वे अधिक से अधिक ग्राहकों तक पहुँच सकें।

इस प्रकार, इस परियोजना का उद्देश्य हस्तशिल्पियों और शिल्पकारों की पहचान और दस्तावेज़ीकरण के माध्यम से उनकी कला का संरक्षण, संवर्धन और व्यावसायिक विकास करना है।

3. परियोजना की कार्ययोजना

1. प्रारंभिक सर्वेक्षण और दस्तावेज़ीकरण:

(a.) संताल परगना क्षेत्र के 50 गांवों और कस्बों का दौरा।
(b.) प्रत्येक हस्तशिल्प और शिल्पकार की विस्तृत जानकारी एकत्र करना।
(c.) पारंपरिक हस्तशिल्पों के निर्माण का वीडियो और फोटोग्राफिक रिकॉर्डिंग।
(d.) दस्तावेज़ तैयार करना।
(e.) पहचान कार्ड निर्गत कराना - विकास आयुक्त (हस्तशिल्प) वस्त्र मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा

2. प्रशिक्षण और विकास:

(a.) प्रशिक्षण केंद्र स्थापित करने के लिए भूमि और भवन का चयन।
(b.) प्रशिक्षकों की नियुक्ति। शिल्पकारों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करना।
(c.) युवाओं को पारंपरिक हस्तशिल्पों की कला सिखाना।
(d.) शिल्पकारों के लिए ऋण सुविधा, बैंकिंग सुविधा, मेला इत्यादि उपलब्ध कराना।
(e.) शिल्प गोष्ठी का आयोजन करना।

3. विपणन और बिक्री:

(a.) स्थानीय दुमका शहर में एक विपणन केंद्र स्थापित करना |

(b.) स्थानीय और अंतर्राष्ट्रीय हस्तशिल्प मेलों और प्रदर्शनों में भाग लेना।

(c.) ऑनलाइन प्लेटफ़ॉर्म पर उत्पादों की बिक्री की व्यवस्था।

(d.) विज्ञापन और प्रचार के लिए डिजिटल मार्केटिंग।

(e.) विपणन केंद्र के लिए फर्नीचर और अन्य आवश्यक सामग्री की व्यवस्था।

(f.) वेबसाइट विकास के लिए एक वेब डेवलपमेंट की नियुक्ति।

(g.)वेबसाइट पर उत्पादों की सूची, कीमतें और अन्य जानकारी अपलोड करना।

(h.)सोशल मीडिया और अन्य ऑनलाइन यूट्यूब पर वेबसाइट का प्रचार।

4. बजट

मद	अनुमानित लागत (रुपये में)
प्रारंभिक सर्वेक्षण	2,00,000
दस्तावेजीकरण और विश्लेषण	3,00,000
प्रशिक्षण केंद्र और कार्यक्रम	5,00,000
दुकान की स्थापना	4,00,000
वेबसाइट विकास और ऑनलाइन प्रचार	3,00,000
विपणन और बिक्री	4,00,000
कुल	21,00,000

5. फंड की व्यवस्था

(a.) सरकारी अनुदान: - राज्य और केंद्र सरकार की विभिन्न योजनाओं के तहत अनुदान प्राप्त करना।
(b.) गैर-सरकारी संगठन (NGO): श्रेया संस्था से अनुदान एवं ऋण प्राप्त करना।
(c.) विभिन्न व्यक्तियों से वित्तीय सहायता प्राप्त करना, श्रेया संस्था से अनुदान एवं ऋण प्राप्त करना।

(d.) कॉर्पोरेट सामाजिक जिम्मेदारी (सीएसआर): - विभिन्न कॉर्पोरेट्स के सीएसआर फंड से सहायता प्राप्त करना।
(e.) क्राउडफंडिंग: - ऑनलाइन क्राउडफंडिंग रिमोट के माध्यम से फंड तैयार करना।
(f.) बैंक ऋण: - व्यापारिक बैंक ऋण के माध्यम से वित्तीय सहायता प्राप्त करना।

6. पारंपरिक परिणाम

(a.) हस्तशिल्पों का पुनरुद्धार: - पारंपरिक हस्तशिल्पों का पुनरुद्धार और उनकी मांग में वृद्धि।
(b.) शिल्पकारों की आर्थिक स्थिति में सुधार: - शिल्पकारों की आय में वृद्धि और उनकी आर्थिक स्थिति में सुधार।
(c.) सांस्कृतिक संरक्षण: - संताल परगना क्षेत्र की समृद्ध संस्कृति और परम्परा का संरक्षण।
(d.) रोजगार के अवसर: - क्षेत्र में नए रोजगार के अवसरों का सृजन।
(e.) युवाओं और समाज में सांस्कृतिक जागरूकता बढ़ाना।

निष्कर्ष:

संताल परगना क्षेत्र के लुप्त होते हस्तशिल्पियों और शिल्पकारों का विकास न केवल उनकी आर्थिक स्थिति में सुधार लाएगा, बल्कि हमारी सांस्कृतिक विरासत को भी संरक्षित करेगा। इस परियोजना के माध्यम से हम पारंपरिक हस्तशिल्पों को पुनर्जीवित कर सकते हैं और उन्हें नए युग के अनुरूप बना सकते हैं। इस परियोजना का सफल कार्यान्वयन संतल परगना क्षेत्र की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को बचाने और उसे नई पीढ़ी के लिए संरक्षित करने का एक महत्वपूर्ण कदम होगा।

परियोजना निदेशक

श्रेया संस्था, दुमका।

आज दिनांक ..... को श्रेया संस्था के कार्यकारिणी सदस्यों द्वारा विस्तृत चर्चा की गई इसमें कुछ सुझाव भी दिए गए जिसे परियोजना प्रस्ताव में जोड़ दिया गया। विस्तृत चर्चा के उपरांत "संताल परगना क्षेत्र के लुप्त होते हस्तशिल्प और शिल्पकारों का विकास" इस परियोजना को स्वीकृति दी गई।

कोषाध्यक्ष सचिव अध्यक्ष

कार्यसमिति सदस्य कार्यसमिति सदस्य कार्यसमिति सदस्य

FORM No.1

Proforma for Photo Identity Card for Handicrafts Artisan

Photo Size
4.5x3.5 CM With
White Background

1	Full Name of Artisan			
	Name of the Head of the Household			
2	Gender : Male ( ) / Female ( ) / Transgender ( )			
3	Date of Birth:			
4	Address: C/O ( ) D/O ( ) S/O ( ) W/O ( ) H/O ( )			
	House No. / Bldg./ Apt.	Street/Road/Lane		
	Landmark	Area/Locality/Sector		
	Village/Town/city	Post Office		
	District	Sub-district	State	
	E-mail	Tele / Mobile No.	Pin code	
5	Educational qualification			
6	Social Group : SC ( ) ST ( ) OBC ( ) GEN ( ) MIN ( )			
	Economic Group : APL ( ) BPL ( ) Antyodaya ( )			
	Card No. (APL/BPL/Antyodaya , if any			
7	**Bank Details**			
	Bank Name / Branch	State		
	Account No .	IFSC code		
8	**Aadhaar No.**			
9	**Identity Card number of Handicrafts artisans, if any**			
10	S.No. in the latest Census of Handicrafts Artisan _____ (If not available AD verify & certify that the applicant is a genuine craftsman)			
11	Name of the craft Practices (Major/Specific) (Carpet & other floor covering/ Art Metal ware / Wood ware/ Hand printing textiles/ Scarves/ Embroidered & Crocheted goods/ Shawl as art ware/Zari & Zari goods/ jewellery /Cane & Bamboo)			
12	Year of Experience in practicing the craft			
13	Annual income from craft practiced			
14	Annual income from other sources : Agricultural / other			
15	Family details (Family consists of artisans, His /Her spouse & dependent minor children only)			
	Member Name	Relation	Age	
	Member name	Relation	Age	
	Member name	Relation	Age	
16	Name of the working unit :-			
	(i)Registration Number:-			
	(ii)Year of Registration			
	(iii)Turn Over:- Below 1 Lakh / 1-5 Lakh / above 5 Lakh			
	(iv)Total Artisans Employed:- (Hired) /Household Member (self Employed)			
17	Whether Holding Credit Card:- Artisans credit card (ACC)/ SSC/ Other			
18	Status whether Shilp Guru/ National Award/National Merit Certificate holder/ State Award/			

Declaration

I certified that information provided by me and information contained herein is my own and is true, correct and accurate.

Applicant's Signature/Thumb print

Verify by Assistant Director (M&SEC)

फार्म नं.-1

हस्तशिल्प कारीगर के लिए पहचान पत्र हेतु प्रोफार्मा

Photo Size
4.5x3.5 CM With
White Background

1	कारीगर का नाम			
	घर के मुखिया का नाम			
2	लिंग : पुरुष( )/महिला( )/ ट्रान्सजेंडर( )			
3	जन्म तिथि:			
4	*पता :- के द्वारा* ( ) सुपुत्री ( ) सुपुत्र ( ) पत्नी ( ) पति ( )			
	घर का नंबर/बिल्डिंग/अपार्टमेंट		गली/सड़क/लेन	
	लैंडमार्क		एरिया/लोकलेटी/सैक्टर	
	ग्राम/नगर/शहर		डाक खाना	
	ज़िला	उप-ज़िला		राज्य
	ई-मेल	मोबाइल नंबर		पिन कोड
5	शैक्षणिक अर्हता:			
6	सामाजिक वर्ग :-अनुसूचित जाति ( ) अनुसूचित जनजाति ( ) अन्य पिछड़ा वर्ग( ) सामान्य ( ) अल्पसंख्यक ( )			
	आर्थिक वर्ग : ए पी एल ( ) बी पी एल( ) अंतोदेय ( )			
	कार्ड संख्या : एपीएल/बीपीएल/ अंतोदेय, यदि कोई हो			
7	बैंक का विवरण			
	बैंक का नाम/शाखा		राज्य	
	खाता संख्या		आईएफएससी कोड	
8	आधार संख्या			
9	हस्तशिल्प कारीगर का पहचान पत्र संख्या, यदि कोई हो			
10	हस्तशिल्प कारीगर की अद्यतन जनगणना की क्रम संख्या _____(यदि उपलब्ध न हो तो सहायक निदेशक सत्यापित करे कि आवेदन करने वाला व्यक्ति वास्तविक शिल्पकार है)			
11	किये जा रहे शिल्प का नाम (मुख्य/विशेष) कालीन एवं अन्य फर्श बिछावन/आर्ट धातुपात्र/ काष्ठपात्र/वस्त्र हाथ ठप्पा छपाई/स्क्रीवस/कशीदाकारी एवं क्रोशिए से बनी वस्तुएं/कलात्मक शॉल/ज़री तथा जरी से बनी वस्तुएं/आभूषण/बेंत एवं बांस)			
12	शिल्प में कार्य करते हुए अनुभव के वर्ष			
13	शिल्प से प्राप्त वार्षिक आय			
14	अन्य स्त्रोतों से प्राप्त वार्षिक आय: कृषि/अन्य			
15	परिवार संबंधी विवरण (परिवार में केवल कारीगर, उनके पति / पत्नी और छोटे आश्रित बच्चे शामिल हैं)			
	सदस्य नाम	आयु	लिंग पुरुष( ) महिला ( )	
	सदस्य नाम	आयु	लिंग पुरुष( ) महिला ( )	
	सदस्य नाम	आयु	लिंग पुरुष( )महिला ( )	
16	कार्यकर इकाई का नाम'-			
	पंजीकृत :- हां/नहीं			
	पंजीकरण संख्या :-			
	पंजीकरण का वर्ष			
	टर्नओवर :- एक लाख से कम / 1-5 लाख /5 लाख से अधिक			
	कुल कार्यरत कारीगर :- (किराए पर)/घर के सदस्य (सैल्फ एम्पालायड)			
17	क्या आपके पास क्रेडिट कार्ड है:- ए सी सी _____/एस एस सी_____/अन्य			
18	स्थिति:- शिल्प गुरु/ राष्ट्रीय पुरस्कार/राष्ट्रीय श्रेष्ठता प्रमाण-पत्र धारक/ राज्य पुरस्का			

घोषणा

मैं प्रस्तावित करता हूं कि मेरे द्वारा मुहे कराई गई जानकारी और इसमें दी गई जानकारी मेरी अपनी है जो सत्य, सही एवं ठीक है।

आवेदक के हस्ताक्षर/अंगूठे का निशान

सहायक निदेशक (हस्तशिल्प विपणन एवं सेवा विस्तार केन्द्र) द्वारा सत्यापित